मूल्य शिक्षा की आवश्यकता, दिशा निर्देश (मार्गदर्शक सिद्धांत), वस्तु एवं विधि–प्रक्रिया

शिक्षा संस्कार की भूमिका – जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमण

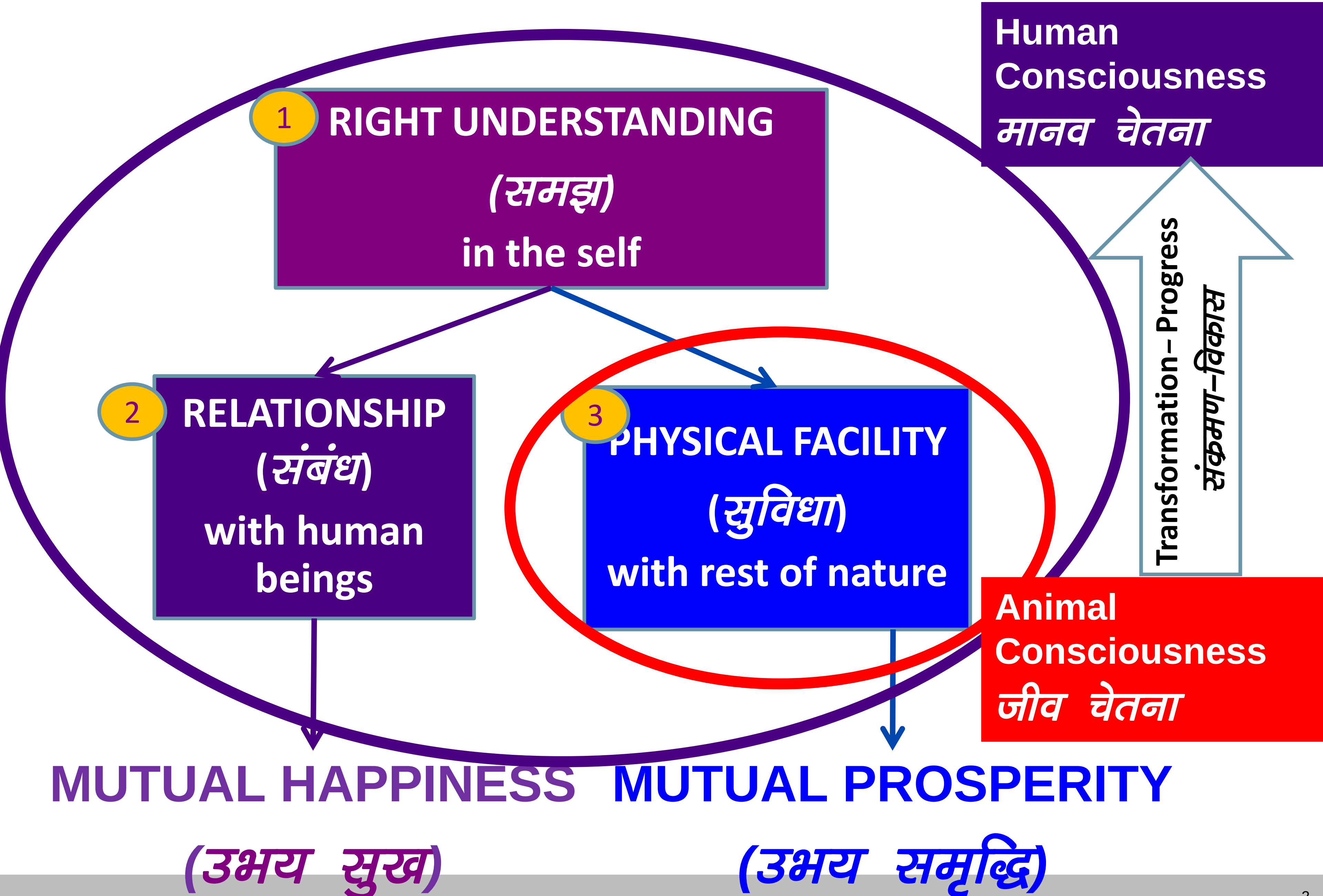

शिक्षा से अपेक्षा

शिक्षा की भूमिका :–

1. समझना – मानव लक्ष्य की स्पष्टता (क्या करना है ?)
2. सीखना – हुनर, तकनीकी (कैसे करना है ?)

क्या ये दोनों महत्वपूर्ण हैं ?

इनका वरीयताक्रम क्या होगा ?

1. समझना – क्या करना है ? ➡ मूल्य शिक्षा
2. सीखनाा – कैसे करना है, तदनुसार जीना ➡ तकनीकी शिक्षा

वर्तमान स्थिति : कैसे करना है पर जोर/ध्यान

जाने–अनजाने आज हमारी शिक्षा मुख्यतः हुनर/तकनीकी पर आधारित हो गयी है। मूल्य शिक्षा का हिस्सा नगण्य है।

अतः हुनर एवं तकनीकी में नई–नई खोज होने के बावजूद, हम उनके सदुपयोग/सार्थकता को नहीं सुनिश्चित कर पा रहे हैं।

"क्या करना है" की स्पष्टता के बिना "कैसे करना है" को कितना भी कुशल एवं प्रभावकारी ढंग से करें, हम किसी निश्चित बिन्दु पर पहुँच नहीं पाते हैं।

स्वयं में इस स्पष्टता के अभाव में, हम जल्दी ही दूसरे से प्रभावित हो जाते हैं और उन मान्यताओं को ही अपना लक्ष्य बना लेते हैं।

“क्या करना है” – निश्चित करना

“क्या करना है” – “क्या महत्वपूर्ण है”- “ लक्ष्य ”

इस लक्ष्य को हम स्वयं अपने अधिकार पर तय करना चाहते हैं या दूसरों पर (समाज, मान्यताएं) पर निर्भर रहना चाहते हैं।

यदि हम लक्ष्य को स्वयं नहीं तय कर रहे हैं तो :–

1. दूसरा मनुष्य मुझे नियंत्रित/संचालित कर रहा है।
2. मान्यताओं/दूसरों की कही बातों को बिना जाँचे–परखे हम लक्ष्य बना लेते हैं।
3. हमारा सारा श्रम/समय/प्रयास उन मान्यतागत लक्ष्यों को पूरा करने में नियोजित हो जाता है, हम व्यस्त हो जाते हैं।

“क्या करना है” – “क्या महत्वपूर्ण है”- उदाहरण

उदाहरण – तकनीकी संस्थानों में प्रवेश पाये छात्रों की भाषा पहले एक साल में अत्यधिक अभद्र हो जाती है।

अभद्र भाषा को स्वतंत्रता/विकास का प्रतीक माना जा रहा है और नए छात्र बिना इसकी जाँच–परख किये इसका प्रयोग प्रारंभ कर देते हैं।

क्या हमने निर्णय पूर्वक अपनी भाषा परिवर्तित की है या अवचेतन में ऐसा हो गया है।

अतः हम पीढ़ी–दर–पीढ़ी मान्यताओं के आधार पर चलते रहते हैं।

जाँचे – ’क्या करना है (लक्ष्य)’ को स्वयं तय कर रहे हैं या दूसरा तय कर रहा है ?

प्रश्न ये है कि ’क्या हम सजग हो सकते हैं ?’ – ’क्या हम अपने अधिकार पर जाँच–परख कर सकते हैं।

क्या लक्ष्य को स्वयं तय करना संभव है ?

क्या यह संभव है कि हम 'क्या करना है (लक्ष्य)' को/सार्थक–निरर्थक को/सही–गलत को तय कर सकें।

क्या हम इसे अपने अधिकार पर जाँच परख कर सकते हैं।

क्या संभव है ?

हम इनका आगे अध्ययन करेंगें।

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता ?

1. 'क्या करना है ?' – समझना
2. 'कैसे करना है ?' – सीखना

'कैसे करना है ?' इसे तय करने के लिए मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है ?

इसे सुनिश्चित करने के लिए 'समग्र दृष्टिकोण' को सुनिश्चित करना आवश्यक है ?

''समग्र दृष्टिकोण'' को विकसित करने हेतु मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है ?

दिशा–निर्देशक (मार्गदर्शक सिद्धांत)

1. सार्वभौमिक	– देश, दिशा, काल
2. तार्किक	– तर्कसंगत/प्रश्न एवं चर्चा संभव (करो/ना करो पर आधारित नहीं)
3. सहज	**–** मानव को सहज स्वीकार्य एवं प्रकृति में इसके पूरा होने की व्यवस्था
4. सत्यापन योग्य	**–** सहज स्वीकार्यता के आधार पर व्यवहार एवं कार्य में प्रमाणित किया जा सके
5. समग्रता का समावेश	– जीने के सभी आयाम का समावेश
6. व्यावहारिक	– मनुष्य एवं प्रकृति के साथ सुख–समृद्धि पूर्वक निर्वाह

Based on the inputs of MHRD

मूल्य शिक्षा की वस्तु

1. सार्वभौमिक – देश, दिशा, काल
2. तार्किक – तर्कसंगत/प्रश्न एवं चर्चा संभव (करो/ना करो पर आधारित नहीं)
3. **सहज** – मानव को सहज स्वीकार्य एवं प्रकृति में इसके पूरा होने की व्यवस्था
4. **सत्यापन योग्य** – सहज स्वीकार्यता के आधार पर व्यवहार एवं कार्य में प्रमाणित किया जा सके
5. समग्रता का समावेश – जीने के सभी आयाम का समावेश
6. व्यावहारिक – मनुष्य एवं प्रकृति के साथ सुख–समृद्धि पूर्वक निर्वाह

मूल्य शिक्षा की वस्तु

समग्रता का समावेश

मानव के जीने के सभी चार आयाम का समाविष्ट होना

1. विचार
2. व्यवहार
3. कार्य
4. समझ / अनुभव

उदाहरणः– विचार में हम स्पष्टता (समाधान) चाहते हैं, भ्रान्ति (समस्या) नहीं

जीने के सभी चार स्तर का समाविष्ट

1. मानव
2. परिवार
3. समाज
4. प्रकृति / अस्तित्व

उदा.– समाज में हम अभय चाहते हैं, भय नहीं।

प्रक्रिया

1. सार्वभौमिक – देश, दिशा, काल
2. तार्किक – तर्कसंगत/प्रश्न एवं चर्चा संभव (करो/ना करो पर आधारित नहीं)
3. **सहज** – मानव को सहज स्वीकार्य एवं प्रकृति में इसके पूरा होने की व्यवस्था
4. **सत्यापन योग्य** – सहज स्वीकार्यता के आधार पर व्यवहार एवं कार्य में प्रमाणित किया जा सके
5. समग्रता का समावेश – जीने के सभी आयाम का समावेश
6. व्यावहारिक – मनुष्य एवं प्रकृति के साथ सुख–समृद्धि पूर्वक निर्वाह

मूल्य शिक्षा	नैतिक शिक्षा
प्रस्ताव – स्वयं में जाँच परख	उपदेश / आज्ञा(करो / ना करो)
↓	↓
समझना, जानना	मानना
↓	↓
स्वप्रेरण / अंत:प्रेरणा	बाह्–प्रेरणा / तात्कालिक
–स्वानुशासन	–भय / प्रलोभन पर आधारित
–स्वतंत्रता	–परतंत्रता

मूल्य शिक्षा की प्रक्रिया – स्वप्रामाणिक

Whatever is said is a **Proposal** (**Do not assume it to be true**)

Verify it on Your Own Right – on the basis of your **Natural Acceptance**

It is a process of **Dialogue**

A dialogue between me and you, to start with

It soon becomes a dialogue **within your own self**

प्रस्ताव है (मानें नहीं)

जाँचें – स्वयं के आधार पर।

अपनी **सहज स्वीकृति** के आधार पर।

यह **संवाद** की प्रक्रिया है।

यह संवाद आपके और मेरे बीच शुरू होता है, फिर **आप में** चलने लगता है।

सहज स्वीकृति

स्वतंत्रता–सहजता पूर्वक जो स्वीकार्य होता है

सहज स्वीकृति

जैसे–

संबंध

भोजन – स्वास्थ्य के लिए

मोबाइल – संवाद के लिए

स्वीकृति

स्थिति–परिस्थितिवश, अभ्यासवश जो स्वीकार लेता हैं

मान्यता, संवेदना, सहज स्वीकृति

कभी संबंध, कभी विरोध

भोजन – कभी स्वास्थ्य के लिए

– कभी केवल स्वाद के लिए

मोबाइल – कभी संवाद के लिए

– कभी सम्मान के लिए

मूल्य शिक्षा की प्रक्रिया

समझ – स्वयं में जाँच–परख से

जीने में जाँच कर देखने से

जो भी कहा जा रहा है – प्रस्ताव है

इसकी जाँच–परख स्वयं में होना

1. अपनी सहज–स्वीकार्यता के आधार पर
2. अपने जीने में जाँच कर

जाँचने यह संयुक्त प्रक्रिया मुझमें समझ सुनिश्चित करती है।

यह मानने की प्रक्रिया नहीं है।

सारांश

आवश्यकता – स्पष्टता

1. क्या करना है – क्या महत्वपूर्ण है – मानव लक्ष्य के संदर्भ में
2. कैसे ? – लक्ष्य को पूरा कैसे करें – मानव लक्ष्य के पूर्ति के संदर्भ में

दिशा–निर्देश :

1. सार्वभौमिक – देश, दिशा, काल
2. तार्किक – तर्कसंगत/प्रश्न एवं चर्चा संभव (करो/ना करो पर आधारित नहीं)
3. **सहज** – मानव को सहज स्वीकार्य एवं प्रकृति में इसके पूरा होने की व्यवस्था
4. **सत्यापन योग्य** – सहज स्वीकार्यता के आधार पर व्यवहार एवं कार्य में प्रमाणित किया जा सके
5. समग्रता का समावेश – जीने के सभी आयाम का समावेश
6. व्यावहारिक – मनुष्य एवं प्रकृति के साथ सुख–समृद्धि पूर्वक निर्वाह

प्रक्रिया

वस्तु